|  |
| --- |
| 10. März 2024 |
| **04. Fastensonntag B Laetare** |
| Erste Lesung: 2 Chr 36,14-16.19-23; Zweite Lesung: Eph 2,4-10; Evangelium: Joh 3,14-21 oder |
| Erste Lesung: 1 Sam 16, 1b. 6-7. 10-13b; Zweite Lesung: Eph 5, 8-14; Evangelium: Joh 9, 1-41 (oder 9, 1. 6-9. 13-17. 34-38) |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 489, 1-3 | Lasst uns loben |
|  | GL 149, 1+3 | Liebster Jesu, wir sind hier |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 155 | Kyrie |
|  |  |  |
| Antwortgesang 1: | Ps 137, 1-6 |  |
|  | Kehrverse: |  |
|  | GL 74, 1 | Wie könnte ich dich vergessen |
|  | GL 634, 3 | Richtet euch auf |
|  | Psalmenlied: |  |
|  | GL 438, 1-5 | Wir, an Babels fremden Ufern |
| Antwortgesang 2: | Ps 23, 1-6 |
|  | Kehrvers:  |  |
|  | GL 37, 1 | Der Herr ist mein Hirt |
|  | oder Psalmenlied: |  |
|  | GL 421, 1+3+4 | Mein Hirt ist Gott, der Herr |
|  | oder Lied: |  |
|  | GL 365 | Meine Hoffnung |
|  |  |
| Ruf vor dem Evangelium: | GL 584, 9 oder GL 560, 1 oder GL 644, 6 |
|  | Vers 1: |
|  | *So sehr hat Gott die Welt geliebt,* |
|  | *dass er seinen einzigen Sohn hingab,* |
|  | *damit jeder, der glaubt, in ihm das ewige Leben hat.* |
|  | Vers 2: |  |
|  | *So spricht der Herr:* |
|  | *Ich bin das Licht der Welt.* |
|  | *Wer mir nachfolgt, hat das Licht des Lebens.* |
|  |  |  |
| Credo: | Sprechen |  |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 460, 1-5 | Wer leben will |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 199 | Heilig |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 497, 5 | Denkmal, das uns mahnet |
|  |  |  |
| Danksagung:  | GL 298 | So sehr hat Gott  |
|  |  |  |
| Schlusslied: | GL 464, 1+2+5! | Gott liebt diese Welt |
|  |  |  |